IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अज्ञेय का प्रयोगवाद

[1]Dr. Mrs. Neelima Dubey

साहित्य मानव जीवन की ऐसी प्रतिछाया जिसमें जीवन की निरंतरता से लेकर परिवर्तन, षून्यता से लेकर विद्रोह या आंदोलन से लेकर अनुभूति सब कुछ शब्द ध्वनियों में सहज प्रकार–प्रकार हो जाता है कि पढनेवाला एक अनुभव और भाव दोनों को जी लेता है। यही कारण मानव जीवन और उसकी सोच के बदलाव साहित्य के परिवर्तन व बदलाव के कारण बने।

आचार्ये रामचंद्र शुक्ल से लेकर आधुनिक साहित्यकारों ने जब भी हिंदी साहित्य के इतिहास को व्यवस्थित करने का प्रयास किया । उसे **दाएँ** और काल में व्यक्त किया गया क्योंकि ये साहित्य धा**राएँ** त्कालीन समाज की सोच **आर्यदेषो की** सूचक ही हैं। आदिकाल से होती हुई काव्यधारा भक्तिकाल की प्रार्थना रीतिकालीन श्रृंगार से सँवरती हुई आधुनिक काल में प्रविष्ट हुई। इस समय आदिकाल समय भारतेंदु युग के सभी साहित्कारों ने तत्कालीन समाज के प्रतियथार्थ बोध ही व्यक्त किया।

द्विवेदी युग में राष्ट्रीयता का स्वर सामाजिक जागरुकता का चित्र देने वाला है। छायावाद तक आते विशाल के आविष्कारों के कारण समस्त विशव ईकाई बन जाता है और अन्य देशों के दर्शनों आंदोलनों से भारतीय समाज भी काव्य प्रेरणा लेता है।

सन 1940 तक निर्विधा काव्यदोलन

1. आधुनिक हिन्दी काव्य डॉ भगीरथ मिश्रा

1. लक्ष्मीकांत वर्मा के अनुसार 'परीक्षण प्रयोग की जिज्ञासा है।

2 साहित्य में प्रयोग आवशक होते है क्योंकि केवल पुरानों के आज्ञा पर जो नकल होगी वह युग को मांग को समाधान नहीं दे सकती।

3 जहाँ तक प्रयोगशीलता का प्रश्न है। कहा जा सकता है हर युग में नयी काव्य प्रवृति नये प्रयोग वस्तु और शिल्प आदि में देखी जा सकती है। नवीन प्रयोगों के प्रति परंपरावादी कम आकृष्ट होते हैं युवा पीढी आधिक।

4 इस सत्य से प्रत्येक सहमत होगा कि प्रयोग के अभाव रचनात्मक कार्य संभव नहीं हैं। अज्ञेय जी इसे स्पष्ट करते हुए लिखा है –''जो कहता है कि मैंने जीवन भर कोई प्रयोग नहीं किया। वह वास्तव में यही कहता है कि मैंने जीवन भर कोई रचनात्मक कार्य करना नहीं चाहा। ऐसा व्यक्ति यदि सच कहता है तो यही पाया जायेगा कि उसकी 'कविता' कविता नहीं है। उसमें स्पनात्मकता नहीं है। वह कला नही शिल्प है हस्तलाघव है।

इसी तरह साहित्य में जब परंपराएँ रुढ हो जाती हैं अथवा साहित्य के बँधे बँजाए नियमों का कशाघात से अनुकरण का ढाँचामात्र रह जाता है तब उससे मुक्ति पाने के लिये प्रयोग आवश्क है। कुछ ऐसा हो छायावादोत्तर।

दूसरा सप्तक–पृ.8

1.साहित्य कोश प्रथम भाग पृ. 483

2.प्रयोगवादी काव्य डॉ पवन कुमार मिश्र पृ. 6

3.आधुनिक हिन्दी काव्य–बलभद्र तिवारी 517

कवियों के साथ भी हुआ। वस्तु और शिल्प के आधार इतने प्रयोग होने लगे एक सममावादी काव्य रचना को प्रयोगवाद का नाम दे दिया गया।

प्रयोगवाद का प्रारंभ तार–सप्तक के प्रकाशन 1943 से माना जाता है। अज्ञेय ने अपने संपादकीय में 'प्रयोग' शब्द की चर्चा शिल्प के संदर्भ की है। इस पुस्तक में जिन कवियों को रचनाएँ तथा काव्य प्रकाशित है उनमें से अधिकांश व्यक्तित्व की–स्थापना समष्टि पर व्यक्ति के हावी होने काव्य में नूतन प्रयोगों नवीन चेतना आदि को आधार माना है।

कवि अज्ञेय संपादक के साथ सर्वप्रथम कवि है। उनके अनुसार–''कवि का कथ्य उसकी आत्मा का सत्य है–वह सत्य व्यक्ति से बँधा नही है व्यापक है।''[1] अज्ञेय के अनुसार साधारणीकरण और संप्रेषण को कवि कर्म को मौलिक समस्या माना है। जिनके कारण वह प्रयोगशीलता की ओर द्रढता है। प्रयोग हर काल में जरुर हुए है परंतु अभेद्य–क्षेत्रों का अन्वेषण उनकी दृष्टि में आवश्यक है। इसलिए साधारण शब्द योजना सहायक सिद्ध नहीं होती तो कवि विराम संकेतो से अंको और सीधी तिराछी लकीरों से छोटे बडे टाईप से सीजे उलटे।

अज्ञेय–तार सप्तकःपृ.74

''श्री मान––––
 श्री मुत––––
 श्री युत लक्ष्मी संत
––––––––––––
 ––––––––––––
 ––––––––––कवि हो''

अक्षरों से लोगो और स्थानों के नामों से अधूरे वाक्यों से सभी प्रकार के इतर साध्सनो से उलझी हुई संवेदना को पाठकों तक अक्षुण पहुँचाने यें प्रयत्नशील होता है। उदाः प्रेम की देजेडी हाय! न्ही चैन जागते ही कर गई रे इस प्रकार अज्ञेय साधारणीकरण का नवीन संदर्भ में प्रस्तुत करते हैं।

प्रथम तार–सप्तक के पांच कवि–गजानन माधव मुक्तिबोध, नेमिचंद,भारत भूषण अग्रवाल,प्रभाकर माचवे तथा रामविलास शर्मा की कविताओं में समाजवादी द्रष्टिकोण प्रबल है। समग्र रुप में तार–सप्तक के कवियों के कृतियों से निम्न लिखित निष्कर्ष निफलते हैं।

मुक्तिबोध वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बाहर आना अपेक्षित मानते है नेमिचंद आंतरिक चेतना के प्रति इंगित करते है। अज्ञेय कुठाओं और वर्णनाओं को अभिव्यक्त करना चाहते है। प्रभाकर माचवे लोकगाथा और जीवन में नवीनता की और अग्रवाल सामाजिकता की बात करते हैं।

प्रथम तार–सप्तक बाद 1947 में अज्ञेय ने प्रतीक का प्रकाशन आरंभ किया और प्रयोगवादी काव्य के सत्य बोध तथा संबंध में व्यापक चर्चा की।

द्वितीरय तार–सप्तक का प्रकाशन सन्न 1951 में हुआ। इस अवधि अलोचकों ने।

1. तार–सप्तक का नवीन संस्करण भी आ गया है। जिसमें सभी कवियों ने पुराने वक्तव्यों में 'पुनश्च' जोडकर अपनी काव्य मान्यताओं को स्पष्ट करने का उनक्रम किया है। पहले की अपेक्षा अब ये कवि जन–समाज व्दारा अधिक ग्रहित हैं। प्रयोगवाद को लेकर अनेक विचार प्रस्तुत किए।

समाज और व्यक्ति के संदर्भ में नदी के द्विप का

सौन्दर्य देखे यह प्रतीकात्मकता अखूठा उदा.है।
हम नदी के व्दिप है।
हम नही कहते कि हमें छोड स्त्रोतवाहिनी बह जाय
वह हमें आकार देती है
हमारे कोण अंतरीप उभार सैकत कूल
एक गोलाइयाँ है। उसकी मढी है।
मॉ है वह! है इसी से बने हम हैं
किंतु हम है व्दिप हम जाए नहीं
स्चिर समर्पण है हमारा धन सदा से व्दिप है स्त्रोतवाहिनी के
किंतु हम बहते नहीं है क्योकि बहना रेत है।
प्रयोगो के क्षेत्र में मुक्बिोध को पंक्तियां उल्लेखनीय हैं–
एक अति भव्य देह
प्रचण्ड पुरुष श्याम
मुझे देख पडता हो
क्षेमा में मुस्कुरात्मकता खडा
––लाता है मुझे वह––––
क्रांति शक्ति जनयुग!!
चंद का मुँह ढेडा है पृ.82
सांस्कृतिक प्रतीक–मैं रथ का दूरा दूआ पहिया हूँ
लेकिन मुझे फेंको मतः
इतिहासो की सामूहिक गाति
सहसा झूठा सच्चई दूरे पहियों का
धर्मवीर भारती आश्रय ले।

परंपराओं और स्वछंदवादी आयोजकों किसी उसे बैठ–ढाले का धंध माना और भारतीय परिदेश के विद्रध बताया। प्रयोग बाद के विरोधी एक ओर आचसर्य नंददुलारे वाजपेइ जैसे समीक्षक थे तो दूसरी ओर नकेन जैसे कवि–विचारक। कहा गया कि –''मात्र रुपाकारों पर प्रयोग करने वाली कविताओं को प्रयोगवाद नाम देने का श्रेय प्रगतिवादियों को है।

2. प्रयोगवादी काव्यधारा पर सबसे तीखा आघात आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने ''आधुनिक साहित्य'' नामक ग्रथ में किया जिसमें उन्होंने प्रयोगवाद के प्रतिनिधी संकलन ''तारसप्तक'' में संकलित कवियों की तुलना ऐसे लडकों से की जो स्कूल सेवापास आते हुए घर का रास्ता भूल गये हों

3.उन्होंने प्रयोगवाद को 'अंधाधुध' की संज्ञा दी।

4.और प्रयोगवादी साहित्कि को व्यक्त्विविहीन व्यक्ति माना।

नलिन विलोचना शर्मा केसरी कुमार नरेश मेहता अर्थात नकेन प्रयोगवचाद विरोधी के रुप में स्वयं के ''प्रपद्यवाद'' का शंखनाद

1. देव केसरी कुमार 'अवनिका' जनवरी 1954 में प्रकाशित प्रयोगशील कविता का भविष्य नामक लेख।

2. दे आचार्य नंददुलारे वाजवेयी आधुनिक साहित्य–पृ.10

3. वही. पृ 95

4. प्रयोगवादी साहित्यिक से साधारणतः उस व्यक्ति का बोध होता है। जिसकी रचना में कोई तात्विक अनुभूति कोई स्वाभिविक क्रम विकास या कोई सुनिश्चित व्यक्तित्व नहो।वही पृ.95

कर उठे इन्होंने जहाँ अज्ञेय के साधारणीकरण की व्याख्या के विरोध किया वहीं वे भाषा की संभवनाओं की खोज अपना धर्म मानते थे। 1.इन तमाम विरोधों की आजियों के बीच द्वितीय सप्तक आते–2 काव्य में कुछ ऐसे प्रयोग आ चुके थे जिनसे प्रयोगवाद को स्थिरता मिली। दूसरा सप्तक का प्रकाशन तार–सप्तक के प्रकाशन के आठ वर्ष उपरांत सन्र 1951 में हुआ। जैसा कि भूमिका से जान पडता ळे कि ये सुनियोजित योजना का दूसरा चरण था। जिसका उद्रदेश्य रहा था कि इस प्रकार की पुस्तकों का अनुक्रम प्रकाशित किया जा सके। जिसमें क्रमशः नये आने वाले कवियों की कविताएँ संग्रहीत की जाती रहें।2. इसी सप्तक के माध्यम से अपनी आलोचना से आहत आयोजजन अपने पक्ष को सही ढग से परिभाषित करते हुए कहा–तार सप्तक के कवि ''राहो के अन्वेषी थे'' प्रयोग को लेकर खोज करने की दिशा में जिस संज्ञा से प्रयोगवाद अभिहित किया। उसका उन्होंने विरोध किया और अपनी भूमिका में 'वाद'से ऊपर उठने का समर्थन किया।

1.संकेत के प्रपद्यःपृ.114–115–116.

2.अरोय दूसरा–सप्तक भूमिका–पृ.5

स्पष्ट किया–''प्रयोग का कोई वार नहीं है। हम वारी नहीं रहे हैं। न प्रयोग अपने आपमें इष्ट या साध्य है। ठीक इसी तरह कविता कभी कोई वार नहीं है। इसलिये हमें प्रयोगवादी कहता उतना ही सार्थक है। जितना कि कविता वादी कहना। इसी स्थल पर साधारणीकरण के क्षेत्र तथा वर्तमान समय में कवि की सहानुभूति संवेदना की संप्रेषणीयता के प्रश्न पर विचार किया गया। इससे सप्तक के कवि भवानी प्रसाद मिश्र बहादूर सिंह नरेश मेहता रघुवीर सहाय धर्मवीर भारती है। इस सप्तक की रेखांकित पंक्यिों में कुछ इस प्रकार ळें

जिस तरह हम बोलते है
उस तरह तू लिखा
और उसके बाद भी
हम से बडा तू देख।
भूमिका दूसरा सप्तक पृ:6 भवानी प्रसाद मिश्र

अज्ञेय के प्रतिनिधित्व में इसी तरह तार–सप्तक यात्रा और कुछ आगे बढी। सन 1959 में तीसरा सप्तक प्रकाशित हुआ। अज्ञेय के अनुसार प्रथम सप्तक नयी प्रवृत्ति विशेष थी इसलीए एक पैरवी कार की अपेक्षा थी। द्वितिय सप्तक के कवियों को वादी ने मानकर उन्होंने अपनी योजना को वाद–मुक्त सिह का प्रयत्न किया था। तीसरे सप्तक के कवियों के संबंध में अज्ञेय कोई पैरवी नहीं करते क्योकि इस बार संकलित रचनाओं के मूल्यांकन का भार पाठकों पर सौंपते है।[1] नयी कविता–नये कवि की उपलाब्धियों और उसके प्रति आलोचकों के विभिन्न वर्गो की प्रतिक्रिया को ध्यान में रखकर तीसरा–सप्तक की भूमिका में अज्ञेय ने महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया हैं और कुछ आरोपों के उत्तर भी दिए है। नयी वस्तु शिल्प और तंत्र के संबंध में पुनः विचार करते हुए अज्ञेय प्रयोगवाद को प्रकारन्त से समर्थन देते हैं। गंभीरता से सत्य के प्रयोग के साथ किसी भी प्रकार के खिलवाड न होने के प्रति दो चेतावनी भी देते है।[2]

तीसरा सप्तक में अन्य सप्रकों के समान कवियों ने कविता के संबंध में अपने वक्तव्य दिये हैं। उनके अनुभव एक झलकी इस प्रकार है। श्री प्रयाग नारायण त्रिपाठी ने लिखा हैं। ''इस दृष्टि से देखने पर मुझे लगता है कि नयी कविता नाम पर आज जो कुछ लिखा जा रहा है वह महज बकवास ळें पंक्तियों को छोटा बडा करना शब्दो को तोड मोड देना मन माने तौर पर लय बदल देना बिना आत्मसात किये हुए नयी उपमा–उत्प्रेक्षा या बिम्बों को परेशान पाठकों के

1 तीसरा सप्तकःभूमिका पृ.12

2. तीसरा सप्तकःभूमिका पृ.18

सामने डाल देना–इस प्रकार के दोष आज की कविता में दिखायी देते हैं। में समझता हूँ कि हम हृदय मथन करें कि हम ऐसे बिंदु पर तो खडे हुए जिसके लिए मैथ्यूआर्नल्ड ने लिखा हैःThe one daging the other powerless to be born एक मर रहा पर दूसरा जल लेने में असमर्थ हें।[1]

त्रिपाठी जी के ये विचार किसी समीक्षक को हैसीयत से नही बल्की एक–कवि की दृष्टि से है। कवि का उदधानुण आरंभ हुआ ळे 'इस दृष्टि से' क्योंकि वे अज्ञेय इस बात को सही तौर साफ कर देना चाहत हैं–

''आज कल की कविता बोलचाल की आन्वति मांगती है पर गद्य की लय नहीं मांगती। तुक ताल का बंजन उसने अनात्रिक मान लिया ळे पर लय को वह उक्ति का अभिन्न अंग मांगती है। आज की कविता वह अनुशासन को हम नही तो गौण मान लेने पर आंतरिक अनुशासन को महत्व देती ळें''अज्ञेय के इन कथनों से त्रिपाठी जी सहमत है ओर इस में संदेह नहीं कि यह दृष्टि कविता के लिये अनिवार्य है।'' तीसरा सप्तक एक दृष्टि भागीरथ मिश्र का कल्पना में प्रकाशित लेख।

इस प्रकार तीसरा सप्तक में वर्तमान काव्य धारा में कवियों में जीवन दृष्टि के अभाव को लेकर अज्ञेय का जी

तीसरा सप्तक : पृ. 23; 24

रहे जावि की ऐसा नहीं इस समय भी ताजगी भरी अच्छी कविताएँ नही लिखी जा रही हों लकिन कम हैं इस सप्तक के कवियो में प्रयाग नारायण त्रिपाठी कीर्ति चौधरी मदन वात्सायन केदारनाथसिंह कुँवरनारायण विजयदेव नारायण साहि सर्वेश्वरदयाल सक्सेना शामिल है।

उपरोक्त समग्र वीवेचन से स्पष्ट है। कि 1943 के सप्तक में बार कविता में प्रयोग की चर्चा कर श्री सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन 'अज्ञेय' तत्कालीन काव्य को न केवल एक नयी दिशा बल्की ताजगी नयापन और नये वातावरण को समझाने का प्रयास भी किया।

अज्ञेय की दूरदृष्टि केवल काव्य सृजन तक ही नही थी बल्की मानव मूतयों परंपराओं बौद्धिकता को नये तरी के से परिभाषित करने में थी। उनको जितनी भी आलोचना प्रयोगों को लेकर महान समीक्षकों ने की परंतु उनकी पैनी दृष्टि कविता को समकालीन उपयोग बनाने पर से कभी नहीं रही। इसलिए वे स्वयं को किसी बाद में समेरते हुए प्रवाहमयी कविता दारी
1 इस की चर्चा पहले ही हो चुकी ळें

पुरोध लेकिन इस सच से कोई झाकर नही कर सकता कि प्रयोगवादी पुरोध आधुनिक हिन्दी काव्य के फलक पर एक सशक्त हरता हार कहलाना पसंद करते हैं।

अतः इस प्रकार कहा जा सकता ळें कि काव्य में वस्तु शिल्प बिम्ब प्रतीक आदि प्रयोग कर नये संदर्भ बनाने वाले अज्ञेय प्रथम सप्तक में नयी राहों के खोजकर्ता थे दूसे और तीसरे सप्तक तक आखिार आनेवाले कवियों नयी कविता की धार जोड दिया जिससे काव्य सृजन हमेशा प्रासंगिक जा सके काव्य प्रयोग आज भी आधुकि काव्य में कल फूल रहे हैं चाहे लिए कोई उसे नयी कविता संज्ञा से ही क्यों न पुकारे। कि अज्ञेय प्रयोगशीलता के माध्यम से को आधुनिक बनाने में जिसना योगदान दिया है।

अज्ञेय उल्लास प्रेम और उत्साह से भरी इस काव्य पंक्ति की चर्चा कर रहे जो नये साल पर ''सुहागन का गीत'' से ली हैं।

नये साल की शुभकामनाएँ

खेतो की मेहपर धुल भर पाँवो को

कुहरों में लिपटे उस छोटे से गांव को

जाँतो के गीतों को बैलों की चालो को

करघे के कोल्हू को मछुओ के जालो को

इस पकती रोटी को बच्चों के शोरो को

चौक की गुनगुन को तुम्हे की भोर का

बार ने गुलाब को जुडे के फूल का

हरन नही यार को हर छोटी–भूल का

नयी साल की शुभकामनाएँ।

000